आओ कुछ सीखते हैं बीज से

जिस प्रकार एक किसान किसी अनाज के बीज को मिट्टी में डालता है। मिट्टी स्वाभाविक रूप से उस बीज के अनुरूप अपने गुण, धर्म उस बीज में डाल देती है या यू कहें कि बीज अपने गुण के अनुसार उसमें से अपने सही तत्व खींच लेता है। जैसे अगर मिर्ची का बीज है, टमाटर का या फिर किसी अन्य सब्जी का बीज, वो अपने अनुसार उस गुण धर्म को अपना लेता है। वैसे ही हम आत्मायें भी एक छोटे से बीज के रूप में हैं, उसमें कर्म भी है, उसका फल भी है, सारे चित्र भी हैं, चरित्र भी हैं, लेकिन वो तब तक उभर कर नहीं आते जब तक उसे कर्म रूपी मिट्टी में न डाला जाये।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

अगर हम सुपरफिशियल लेवल पर बात करते हैं तब तो सब कुछ सामान्य लगता है, लेकिन एक बीज पूरे पेड़ की सम्पूर्ण कहानी है। बीच को अपने बढ़ने के लिए, उसको अच्छा वातावरण, बीच-बीच में धूप आदि का सहयोग बहुत ज़रूरी है। वैसे ही हम आत्मायें भी उस परमात्मा की संतान हैं और आत्मा को भी एक छोटे से बीज के रूप में देखा जाता है, तो हम कह सकते हैं कि परमात्मा की संतान होने के नाते उसमें भी उनके गुणधर्म होने चाहिए और हैं भी। जिस प्रकार परमात्मा हर आत्मा को, चाहे वो किसी धर्म आदि को मानने वाला हो, उसे प्यार करते हैं, उसमें भिन्नता नहीं रखते, उसी प्रकार अगर हम आत्मायें भी उस परमात्मा की तरह गुण धर्म वाले हैं तो क्या हमारे अन्दर ऐसे गुणधर्म हैं, जो किसी के लिए दुर्भावना वाले न हों। समय अनुसार आज सभी इस अभ्यास को करने की कोशिश करते हैं कि मैं परमात्मा के अनुसार बीज स्वरूप स्थिति में स्थित हो जाऊँ, लेकिन ये तब तक नहीं होगा जब तक हमारे अन्दर वैसे गुण धर्म नहीं आ जायें। वैसे कहने के लिए है कि हम परमात्मा की सन्तान हैं और परमात्मा की सन्तान होने के नाते ऐसे गुण धर्म हैं ही हैं। लेकिन क्या ये सच्चाई है या केवल एक स्मृति है! हमको याद दिलाया जा रहा है लेकिन हमको याद नहीं रहता है कि हम परमात्मा की संतान हैं और हमारे अन्दर ये विशेषताएं हैं। इसी कारण हम सभी आत्माओं के लिए जो इस पेड़ के तने में है, उसके लिए एक भाव नहीं रख पाते। तो कहीं न कहीं देह अभिमान है जो हमें परमात्मा से भिन्न कर देता है। ऐसे ऊपर-ऊपर से कहने से कि सबके लिए शुभभावना रखो, शुभकामना रखो। ये कैसे होगा, जब तक हम सभी आत्माओं के लिए एक समान विचार परमात्मा जैसा नहीं रखेंगे! इसलिए जैसा शिव बाबा है वैसा ही मुझे हर हाल में होना पड़ेगा। आज भी हम जाति, धर्म, वर्ग, पढ़ाई, भाषा, स्थान आदि को लेकर कितनी भिन्नता रखते, ये तो मेरे देश का है, मेरे गांव का है, मेरी जाति का है, ये सारी स्थूलता भी जो हमें सभी के प्रति एक समान सोचने में आड़े आती है। इस प्रकार परमात्मा अगर सोचे कि यह पंजाब का है, ये गुजरात का है, तो क्या सबको एक समान देख पायेंगे! लेकिन नहीं, परमात्मा देह को नहीं देखते बीज को देखते हैं, इसीलिए कहा जाता है बीज में सृष्टि है। इसी प्रकार हमारे स्वभाव, हमारे संस्कार आदि इस आत्मा रूपी बीज में भरे पड़े हैं। जो किसी न किसी उत्तेजना पूर्ण पदार्थ को देखकर उत्तेजित हो जाते हैं। तो हमको सबसे पहले इस बात पर गहराई से ध्यान देना है। जब कोई मुझे अपना लगता है या अच्छा दिखाई देता है तो कितना अच्छा लगता है। किसी का संस्कार मुझे डिस्टर्ब करता है तो हम बीज रूप का अनुभव न कर सकते हैं और न करा सकते हैं। सबसे पहले समानता चाहिए, उस परम बीज के साथ की। अगर एक शब्द में कहें तो हमको मास्टर भगवान की सम्पूर्ण फीलिंग चाहिए, सब अपने और सिर्फ अपने लगें, हम सबके पूर्वज हैं। इस भावना से हमारी स्थिति बीज रूप हो जायेगी। जैसे मिर्ची में तीखापन, टमाटर में खट्टा पन और गाजर में मीठा पन कहाँ से आता है, उस बीज के अन्दर ही तो होगा ना! मिट्टी का वातावरण मिलने के बाद या उसके प्रभाव में आने के बाद क्या वह अपना गुण धर्म छोड़ देता है, नहीं ना! वो उस मिट्टी से वही गुण खींचता है। वैसे ही हम आत्माओं को भी इस वातावरण में रहते हुए अपने गुण धर्म को न छोड़ सभी व्यक्तियों से सिर्फ और सिर्फ गुण खीचने हैं, तब उस बीज के साथ न्याय होगा।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

मन की बातें

- राजयोगी व.कु. सूर्य

प्रश्न : कुछ समय पहले मेरी माता जी ने शरीर छोड़ा, उनकी अंतिम इच्छा मैं पूरी नहीं कर पायी, जिस कारण से मेरा मन बहुत खिन्न रहता है और उदास रहता है और अब मैं डिप्रैशन में जाने लगी हूँ, कृपया समाधान बताएं।

उत्तर : मनुष्य किसी की हर इच्छा पूरी नहीं कर पाता। अच्छे-अच्छे लोगों को हमने देखा है एक मुस्लिम देश का सुलतान बाहर गया था। पीछे से उसके पिता जी की मृत्यु हो गई। जब वो आया तो बहुत परेशान रहा कि मैं मिला नहीं, उन्होंने मुझे कुछ कहा हुआ था वो भी मैं नहीं कर पाया। देखिये ये हो जाता है इसको बार-बार सोचके उदास हो जाना, डिप्रैशन में आ जाना ये एक नई मिस्टेक हो जायेगी। एक मिस्टेक तो इन्होंने कर दी चलो उनकी इच्छा पूरी नहीं कर पाई आप। लेकिन अब आप ये दूसरी गलती कर रहीं हैं कि डिप्रैशन में आ रही हैं। उदास होने लगीं और निराश होने लगीं। अब काफी कठिनाई आपको जीवन में हो सकती हैं। इसीलिए जो पास्ट हो गया वो भूलने में ही भला है। आत्मा देह छोड़कर चली गई ये भी खेल था कि उसकी इच्छा पूर्ण नहीं होनी थी, नहीं हुई। अब ये तो हरेक के अपने कर्मों पर, अपनी मानसिक स्थिति पर भी निर्भर करता है ना। इसीलिए आप जिम्मेदार नहीं हैं। अब एक व्यक्ति जिसके बहुत अच्छे कर्म हैं। जिसने बहुतों को बहुत सुख दिया है, बड़े पुण्य किये हैं। अब उसकी जो भी इच्छा है अन्त में आपे ही लोग आके पूर्ण करते रहते हैं। दूसरे व्यक्ति के सामने पाप खड़े हैं, दीवार बनकर। कोई उनकी इच्छा पूर्ण करना चाहे भी तो नहीं कर पाता है। इसमें दूसरा व्यक्ति ज़िम्मेदार नहीं है, व्यक्ति की अपनी मनोस्थिति भी ज़िम्मेदार होती है। इसीलिए आपको इस तरह से परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं है। अब वो पूरा हो गया। अब उस आत्मा ने कहीं और जगह जन्म ले लिया होगा। वो वहाँ सुखी होंगी। आपको भी यही कामना करनी चाहिए वो जहाँ भी है बहुत सुखी रहे। बहुत प्रेम प्राप्त करे उसके मात-पिता से। उनका बचपन भी बहुत सुखों में व्यतीत हो। क्योंकि आजकल ये भी कठिन काम होता जा रहा है। और अपनी मानसिक स्थिति को भी बिल्कुल बिगाड़ें नहीं। थोड़ा राजयोग सेंटर में जाकर राजयोग का अभ्यास करें तो आपको जो आन्तरिक सुख मिलेगा, उससे आप इस चीज़ से ऊपर उठ जायेंगे। अपनी माँ के लिए यदि आपको बार-बार वो संकल्प आता ही है, हर्ट होती हैं तो आप 21 दिन अभ्यास कर लें राजयोग का, उनको योग दान दे दें कि मैंने आपकी ये इच्छा पूर्ण नहीं की अब मैं आपके लिए योग के वाइब्रेशन्स भेज रही हूँ तो इस जन्म में आपकी सभी इच्छायें पूर्ण हो जायें। कुछ भी अतृप्ति, अप्राप्ति आपको न रहे। 21 दिन ऐसे योग करेंगे तो उनको डबल प्राप्ति हो जायेगी और आपका चित्त शांत हो जायेगा।

प्रश्न : मैं 12वीं कक्षा में पढ़ती हूँ, आप कहते हैं मात-पिता की दुआएं लेनी चाहिए पर मेरे मम्मी, पापा और मेरा छोटा भाई मुझे बहुत परेशान करते हैं। बद्दुआएं भी देते रहते हैं, घर के बाहर पापा ने छोटी दुकान खोली है और मना करने पर भी सिगरेट और गुटखा जैसी छी-छी चीजें बेचने को रखी हैं। जिस घर से पवित्रता की खूशबू आनी चाहिए थी वहाँ पर सिगरेट की गंदी बदबू आती रहती है। मैं घर साफ करती हूँ और ये तीनों मिलकर घर गंदा कर देते हैं मैं थक गई हूँ, कृपया सुझाव दें।

उत्तर : जिनके घर में आध्यात्मिकता की लहर चलती हो, सुगन्ध आनी चाहिए थी पवित्रता की वहाँ से बदबू आती है। बिल्कुल अच्छी बात कही आपने और मैं आपके विचारों की सराहना करता हूँ कि आपकी इतनी छोटी आयु में इतने सुन्दर विचार हैं। आप अमृतवेले चार बजे उठकर अपने माँ-बाप को आत्मा देखकर पाँच-सात मिनट अच्छे वायब्रेशन्स दें और आप जो बात मुख से कहना चाहती हैं और वो नहीं समझते हैं ये माइंड टू माइंड कहें तो उस टाइम उनका सबकॉन्शियस माइंड जागृत होने के कारण ये विचार माइंड ग्रहण करने लगेगा और उनके विचारों में परिवर्तन आने लगेगा। जैसे मान लो आप कहना चाहती हैं कि ये जो सिगरेट और गुटखा आदि का धंधा अच्छा नहीं है इसे छोड़ दो। तो सवेरे उठकर ही उनको कहें कि तुम तो पवित्र आत्मा हो, तुम तो देवकुल की महान आत्मा हो, तुमने तो भगवान का ज्ञान लिया है उसकी तुम पर नज़र है, अभी ये धंधा छोड़ दो। ये ईश्वरीय मर्यादाओं के प्रतिकूल है, इससे तुम्हारी स्प्रीचुअल प्रोग्रेस भी नहीं होगी, तुमने जो गीता पाठशाला खोली है अनेक आत्माओं का कल्याण करने के लिए ये सब गंदी चीज़ें छोड़ने से अनेक लोग आपके पास ज्ञान लेने आयेंगे कि देखो इसने कितना बड़ा त्याग किया है। ऐसे उससे माइंड टू माइंड बात करें तो उनके मन में वही विचार उठेंगे और उनके जीवन में उतरने लगेंगे।

Contact e-mail -
bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

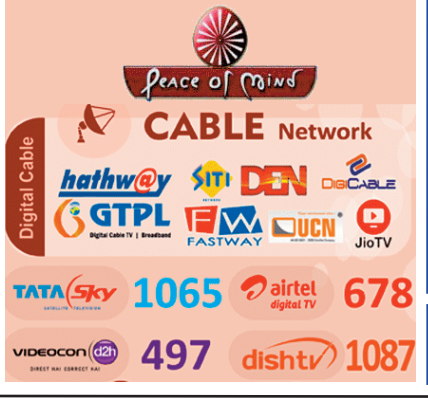

गिद्दड़बाहा-पंजाब। शिवरात्रि के अवसर पर शिव संदेश देने हेतु रैली का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. भाई-बहनें।

सिवानी मंडी-हरियाणा। ज्ञान चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए आई.ए.एस. ऑफीसर जगदीप, ब्र.कु. राजिन्द्र तथा ब्र.कु. निर्मल।